Multidisciplinary International Monthly Magazine

ISSN2454-2725

बहुविषयी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रि

अंक 45-46

जनकृति

जनवरी-फरवरी 201

Issue 45-46

JANKRITI

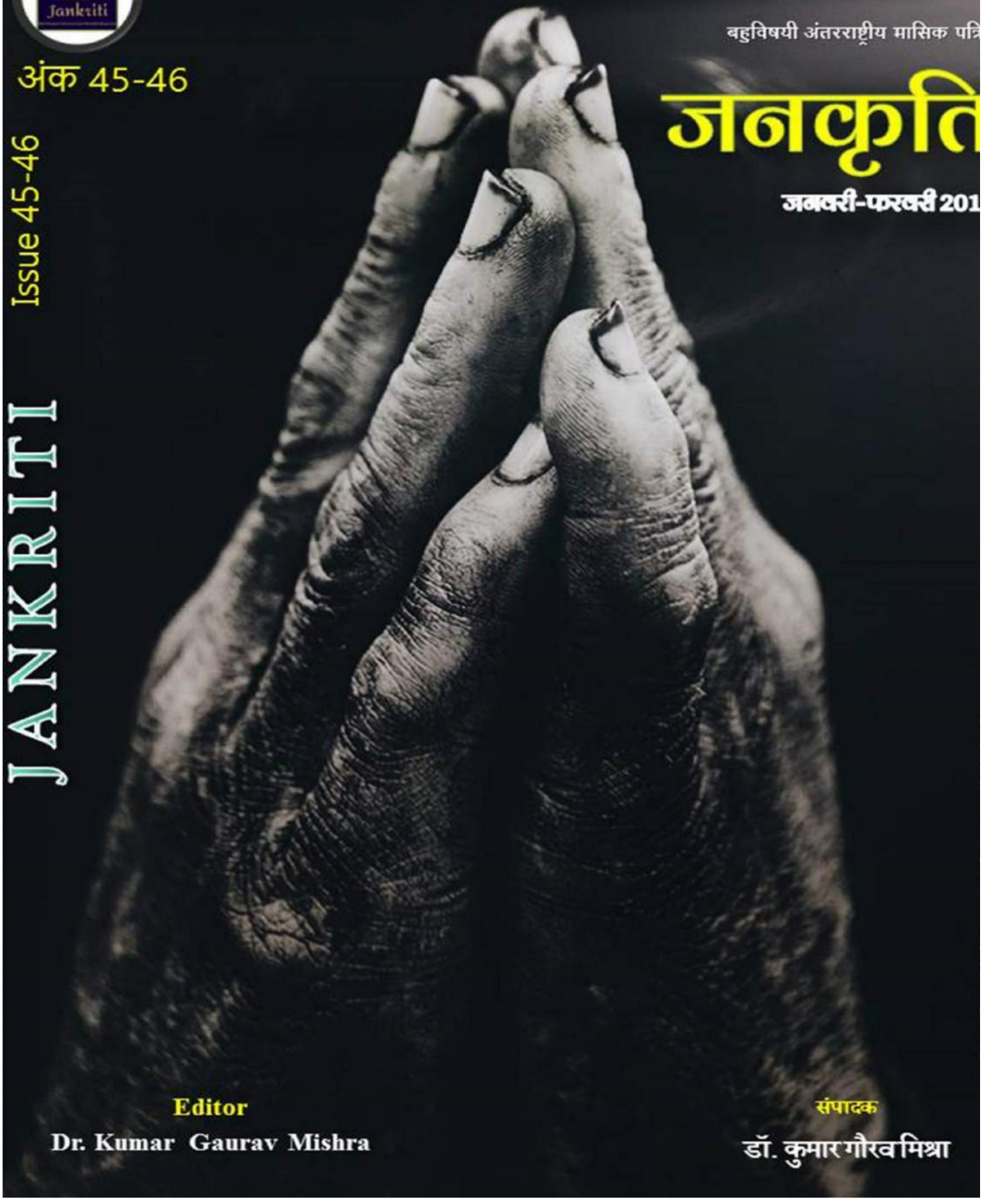

Editor

Dr. Kumar Gaurav Mishra

संपादक

डॉ. कुमार गौरव मिश्रा

इस अंक में ....

साहित्य-विमर्श/ Literature Discourse	शोध आलेख एवं लेख	पृष्ठ संख्या
कविता	अमृता सिन्हा, ओमप्रकाश, नरेन्द्र वाल्मीकि, ओम प्रकाश अत्रि, सारिका भूषण, राजेन्द्र वर्मा, रमन भारतीय,	7-19
नवगीत	सलिल सरोज	19
गज़ल	कैलाश मनहर, राघवेन्द्र पाण्डेय	19-21
कहानी	रोजगार: शंकर लाल माहेश्वरी	22-24
	एक अदद कमरे की तलाश: तेजस पूनिया	25-29
लघुकथा	मृत्युभोज: मुकेश कुमार ऋषि वर्मा	30
व्यंग्य	साहित्य की खटपट!: पूरन सरमा	31-33
	पप्पू - गप्पू ने पछाड़ दिया संता - बंता को: अवधेश कुमार 'अवध'	33-34
यात्रा वृंतात	शिलोंग (मेघालय): गुलाबचंद एन. पटेल	35-36
रिपोर्ताज	देश की त्रासद कथा का बयान : ऋणजल धनजल- डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह	37-40
पर्यटन	अरुणाचल प्रदेश के पर्यटन स्थल: वीरेन्द्र परमार	41-48
पत्र	प्यारी बिटियाँ के नाम मेरा पत्र: सुरेश चंद्र	49-50
जीवनी	हिन्दी लेखक निर्मलवर्मा : व्यक्ति एवं रचना- आचार्य. एस.वी.एस.एस.नारायण राजू	51-57
किस्से कलम के	ग़ज़ल की दुनिया का मुकम्मल शेर है अज़ीज़ अंसारी -डॉ अर्पण जैन 'अविचल'	58
पुस्तक समीक्षा	नियति का महाभारत- समीक्षक : एम एम चन्द्रा	59
	एक नयी दुनिया के सपनो का नाम प्रोस्तोर- समीक्षक: वंदना गुप्ता	60-62
लेख	वर्तमान परिपेक्ष्य में साहित्यकार का सृजनात्मक उत्तरदायित्व: शंकर लाल माहेश्वरी	63-67
रोशनदान	बिखरते परिवार और सांस्कृतिक मूल्यों का हनन: नमिता दुबे	68-69
विश्व साहित्य	दोन किख़ोते: विश्व साहित्य का एक धरोहर- सुभाष यादव	70-80

रिपोर्ताज

देश की त्रासद कथा का बयान : ऋणजल धनजल

डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह
सहायक आचार्य
हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय
कासरगोड, केरल
मोबाइल-09453476741
email- dpsingh777@gmail.com

'रिपोर्ताज' एक फ्रांसीसी शब्द 'रिपोर्ट' से बना है जिसमें किसी आँखों देखी घटना का चित्रण किया जाता है। 'रिपोर्ट' में दिन-प्रतिदिन के समाचारों का स्पष्ट वर्णन होता है जबकि 'रिपोर्ताज' में साहित्यिक शैली में रोचकतापूर्ण चित्रण मिलता है। 'रिपोर्ताज' का प्रारम्भ द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान हुआ और इसकी शुरूआत करने का श्रेय इलिया एहरेन वर्ग को दिया जाता है। हिन्दी में पहला रिपोर्ताज शिवदान सिंह चैहान कृत 'लक्ष्मीपुरा' को माना जाता है जो 1938 में रूपाभ पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। इसके साथ ही 'मौत के खिलाफ़ जिन्दगी की लड़ाई' शिवदान सिंह का एक अन्य महत्त्वपूर्ण रिपोर्ताज है। रांगेय राघव (स्वराज्य भवन, अल्मोड़े का बाजार, बंगाल का अकाल), उपेन्द्रनाथ 'अश्क' (पहाड़ों में प्रेममय संगीत, है कुछ ऐसी बात जो चुप हूँ), धर्मवीर भारती (युद्धयात्रा-1972, मुक्तक्षेत्रे युद्धक्षेत्रे), कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (क्षण बोले कण मुस्काए), शमशेर बहादुर सिंह (प्लाट का मोर्चा-1952), फणीश्वरनाथ रेणु (ऋणजल धनजल-1977, नेपाली क्रांति कथा-1978), विवेकीराय (जुलूस रुका है-1977), भगवतशरण उपाध्याय, रामकुमार वर्मा (पेरिस के नोट्स), निर्मल वर्मा (प्रागः एक स्वप्न), श्रीकांत वर्मा (मुक्ति फौज), कमलेश्वर (क्रांति करते हुए आदमी को देखना) आदि ने हिन्दी जगत को कुछ महत्त्वपूर्ण रिपोर्ताज दिए हैं।

उपरोक्त रिपोर्ताज लेखकों में फणीश्वरनाथ रेणु आंचलिक लेखन के लिए विशेषतः याद किए जाते हैं। मात्र 15 वर्ष की आयु में लेखन की शुरूआत करने वाले फणीश्वरनाथ रेणु हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते हैं। रेणु जी ने रिपोर्ताज के अतिरिक्त कहानी, उपन्यास, संस्मरण, रेखाचित्र विधा को भी समृद्ध किया। उनके रिपोर्ताजों के लेखन की विशिष्टता आम जन से उनका जुड़ाव है। ऋणजल धनजल, वन तुलसी की गंध, श्रुत अश्रुत पूर्वे, समय की शिला पर, आत्म परिचय, नेपाली क्रांति कथा, गंगा, डायन कोशी, हड्डियों का पुल उनके प्रमुख संस्मरणात्मक रिपोर्ताज हैं। दिनमान के संपादक अज्ञेय फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्यिक मित्र थे जो उन्हें सदैव लेखन के लिए प्रेरित करते रहते थे।

'ऋणजल धनजल' रेणु का प्रसिद्ध रिपोर्ताज है जिसमें उन्हेंने बाढ़ और सूखा से प्रभावित बिहार की जनता की भूख और प्यास के बीच जीने की जद्दोजहत का मार्मिक चित्र उकेरा है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट हैं- ऋणजल अर्थात् पानी की कमी (सुखा) और धन जल अर्थात् पानी की अधिकता (बाढ़)। यह रिपोर्ताज दो भागों में विभाजित है- बाढ़ और सूखा। बाढ़ के अंतर्गत पाँच और सूखा के अंतर्गत छह रिपोर्ट हैं जिसमें पूरे बिहार द्वारा पिछले 250 वर्षों से झेली जाने वाली त्रासदी पर बेवाकी से अपनी राय रखी गई है। ग्रंथ के प्रारंभ में रघुवीर सहाय और निर्मल वर्मा के दो महत्त्वपूर्ण लेख हैं जो रेणु के पूरे व्यक्तित्व को उभारकर पाठकों के सम्मुख रख देते हैं। इसमें फणीश्वनाथ रेणु का सोशलिस्ट पार्टी से जुड़कर जनता के दुख और कष्ट को दूर करने का प्रयत्न स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यही कारण है कि वे जयप्रकाश के साथ राजनीति में सक्रिय भागीदारी करते रहे।